डॉ.निम्मी ए.ए

जन्म: एरनाकुलम जिला, केरल

शिक्षा: एम. ए., एम. फिल., पीएच.डी., पी.जी. डिप्लोमा इन हिंदी ट्रांसलेशन (कोच्चिन विश्वविद्यालय), बी. एड. (महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय)

प्रकाशन व सह लेखन:
असगर वजाहत की रचनाओं में सामाजिक सरोकार (माया प्रकाशन)
जनभाषा हिंदी (लोकभारती प्रकाशन)
पटकथा लेखन और विज्ञापन कला (श्रृंखला प्रकाशन)
प्राचीन और मध्यकालीन हिन्दी कविता (जवाहर पुस्तकालय)

विविध राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय यूजीसी लिस्टेड व पीयर रिव्यूड पत्र – पत्रिकाओं एवं संपादित पुस्तकों में ५० शोध आलेख प्रकाशित। विविध पुरस्कारों से सम्मानित। विविध राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय पत्र पत्रिकाओं में सदस्यता।

संप्रति:
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
सरकारी महिला महाविद्यालय
तिरुवनंतपुरम – 695014, केरल।

Email: dr.nimmyanas@gmail.com
Blog: nimmyanas.blogspot.com
Website: www.nimmy.in.net

Also available at : flipkart amazon

माया प्रकाशन
(पुस्तक प्रकाशक एवं विक्रेता)
8A-540, आवास विकास हंसपुरम्,
नौबस्ता, कानपुर-208021

ISBN 978-81-951311-8-1
9 788195 131181 >

हिंदी - मलयालम साहित्य एवं सिनेमा में क्वीर विमर्श ○ सम्पादक: डॉ.निम्मी ए.ए

हिंदी - मलयालम साहित्य एवं सिनेमा में
क्वीर विमर्श

सम्पादक
डॉ.निम्मी ए.ए

हिंदी - मलयालम साहित्य एवं सिनेमा में

क्वीर विमर्श

सम्पादक
डॉ. निम्मी ए.ए

माया प्रकाशन
कानपुर (भारत)

ISBN : 978-81-951311-8-1

पुस्तक : हिंदी-मलयालम साहित्य एवं सिनेमा में क्वीर विमर्श
संपादक : डॉ. निम्मी ए.ए.
© : संपादक
प्रकाशक : माया प्रकाशन

6A/540, आवास विकास हंसपुरम्, कानपुर-208021

मो. 9451877266, 7618879266, 6393609403

Email : mayaprakashankanpur@gmail.com

संस्करण : प्रथम : 2021
शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, नौबस्ता, कानपुर
मूल्य : 750.00
मुद्रण : सार्थक प्रेस, नौबस्ता, कानपुर
जिल्दसाज : तयारक अली, पटकापुर, कानपुर

Hindi-Malayalam Sahitya Evam Cinema Mein Queer Vimarsh
Edited by : Dr. Nimmy A.A.
Price : Sevent Hundred Fifty Only.

स्वर्गीय पूज्य गुरुवर
प्रो. (डॉ.) एम. षण्मुखन जी,
पतिदेव अनस,
प्यारे बच्चे ऐन और ऐमन
को सप्रेम समर्पित

डॉ. लता अग्रवाल जी, डॉ. नीना शर्मा हरेश जी, डॉ. विजेन्द्र प्रताप सिंह जी, डॉ. दिलीप मेहरा जी, डॉ. लता चौहान जी और डॉ. विनय कुमार पाठक जी के अग्रिम सहयोग व शुभकामना केलिए हृदय से आभार दरपेश है। प्रो. (डॉ.) अजिता जी और प्रो. (डॉ.) प्रमोद कोवप्रद जी के सहयोग, प्रेरणा व सुझाव के प्रति मैं आभारी हूँ। प्रकाशक अनिल तिवारी जी का कृतज्ञ हूँ। जिनके सहयोग व सुझावों का संबल पाकर यह ग्रंथ प्रकाशित हो पाया है। सभी के प्रति आभार।

सस्नेह
डॉ. निम्मी ए.

अनुक्रम

पूर्व कथन viii

1. किन्नरों के बदलते तेवर और 'मैं क्यों नहीं'
डॉ. दिलीप मेहरा 21

2. ट्रांसजेंडर की मुक्ति का घोषणापत्र : पोस्ट बाक्स नं0 203 नाला सोपारा
डॉ. तसनीम सुहेल 31

3. मानवीय गरिमा के हक की वकालत : 'गुलाम मंडी'
डॉ. नवीन नन्दवाना 39

4. हिंदी कहानियों में अभिव्यक्त किन्नर जीवन की समस्याएँ
डॉ. आर. शशिधरन 53

5. 'किन्नर केन्द्रित' सिनेमा में विमर्श का प्रादर्श
डॉ. विनय कुमार पाठक 64

6. [illegible] जेंडर और बढ़ता क्राइम : कितना सच कितना झूठ
डॉ. लता चौहान 83

7. भारतीय सिनेमा में थर्ड जेंडर चेतना
डॉ. विजेन्द्र प्रताप सिंह 87

8. हिंदी साहित्य और सिनेमा में ट्रान्सजेंडर का स्वरूप
डॉ. शेख शहेनाज अहेमद 101

9. भारतीय हिंदी फिल्मों में किन्नर विमर्श : 'तमन्ना'
डॉ. शमीमा शहेनाज शेख अब्दुल्ला 109

10. अस्मिता की तलाश में बढ़ते कदम : मैं क्यों नहीं
डॉ. कामिनी आगरवाल 122

11. [illegible] 'पागल' की झंकृति पर झूमता लोक
डॉ. गंगाप्रसाद शर्मा 'गुणशेखर' 128

12. अस्मिता की तलाश के परिप्रेक्ष्य में : 'पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन'
डॉ. के. जयलक्ष्मी 144

13. [illegible] में अभिव्यक्त आत्मगौरव हिजडा
डॉ. पी. प्रिया 151

14. मानवता की खोज में ट्रांस जेंडर
डॉ. राधामणि.सी 159

अपील के रूप में देखने की इच्छा रखती हैं। चित्रा मुद्गल के इस उपन्या[illegible] को ट्रांसजेंडर की मुक्ति का घोषणापत्र कहा जा सकता है और इस तथ्य [illegible] भी अनदेखा नहीं किया जा सकता कि एक रचनाकार की अपेक्षा उन[illegible] एक्टिविस्ट रूप इस उपन्यास में साकार हो उठा है।

संदर्भ

1. सूरज पालीवाल, सघन अनुभूतियों में रचा–बसा तृतीय लिंगी समाज, थर्ड जें[illegible] अतीत और वर्तमान, विकास प्रकाशन, कानपुर–2018, संपादक–एम0 फीरो[illegible] खान, पृ0 सं0 70
2. मधुरेश, पोस्ट बाक्स नं. 203 नाला सोपारा अर्थात् तीसरी सत्ता की व्यथा क[illegible] थर्ड जेंडर के संघर्ष का यथार्थ, विकास प्रकाशन कानपुर–2019, सम्पादक–[illegible] शगुफ्ता नियाज, पृ0 सं0 13
3. चित्रा मुद्गल, पोस्ट बाक्स नं–203 नाला सोपारा, सामयिक प्रकाशन, संस्करण–20[illegible] पृ0 सं0 9
4. वही, पृ0 सं0 12–13
5. वही, पृ0 सं0 22
6. वही, पृ0 सं0 23
7. वही, पृ0 सं0 32
8. वही, पृ0 सं0 26
9. वही, पृ0 सं0 86
10. रोहिणी अग्रवाल, गाली नहीं मनुष्य हूँ मैं, थर्ड जेंडर के संघर्ष का यथार्थ विक[illegible] प्रकाशन कानपुर–2019, सम्पादक–डा. शगुफ्ता नियाज, पृ0 सं0 185
11. वही, पृ0 सं0 30
12. वही, पृ0 सं0 50
13. वही, पृ0 सं0 112
14. वही, पृ0 सं0 186
15. वही, पृ0 सं0 113
16. वही, पृ0 सं0 178
17. वही, पृ0 सं0 186
18. वही, पृ0 सं0 189–190
19. वही, पृ0 सं0 194–195
20. वही, पृ0 सं0 222

हिंदी विभा[illegible]
ए०एम०यू०, अली[illegible]
98975342[illegible]

3

[illegible]ानवीय गरिमा के हक की वकालत : 'गुलाम मंडी'

डॉ. नवीन नन्दवाना

[illegible] वर्षों में विमर्श केंद्रित लेखन बढ़ा है। स्त्री–विमर्श से विमर्श [illegible] की शुरुआत के कुछ वर्षों बाद ही दलित एवं आदिवासी विमर्श [illegible] आया। [illegible] के कुछ वर्षों में तृतीयलिंगी विमर्श, किसान विमर्श, [illegible] और पर्यावरण विमर्श जैसे शब्दों का प्रयोग विविध साहित्यिक [illegible]।

[illegible] आज हिंदी जगत् में बहुत कुछ लिखा एवं पढ़ा जा [illegible] साधारणतया इस संसार में मनुष्य रूप में नर व मादा (पुरुष [illegible]) [illegible] है किंतु इनके अतिरिक्त संसार में एक ऐसा भी वर्ग है [illegible] पुरुष है और न ही पूरी तरह स्त्री। इसी वर्ग को लोग [illegible] या थर्ड जेंडर आदि नामों से पुकारते हैं। प्राचीन [illegible] करने पर पाते हैं कि इस वर्ग के लिए वहाँ किन्नर, [illegible] और [illegible] जैसे शब्दों का प्रयोग हुआ है।

'[illegible]' नामक अपने लेख में महेंद्र भीष्म लिखते हैं कि– "[illegible] का अस्तित्व आदिकाल से है। रामायण, महाभारत में इनका जिक्र है। [illegible] लोग भगवान शिव व कृष्ण की पूजा करते हैं। भले [illegible] आए हों, इनका नाम से मुस्लिम हो या हिन्दू, ये सब [illegible] होते हैं। इनके सात घर होते हैं। प्रत्येक घर का एक [illegible] 'नायक' कहते हैं, जो गुरु नियुक्त करता है। गुरु अपने [illegible] नाचना सिखाता है। गुरु के स्थान को गुरुधाम कहा [illegible] जुड़े किन्नर कमाई का एक हिस्सा जमा करते हैं। [illegible] 450 [illegible] और इतने ही गुरुधाम हैं।"[1]

[illegible] उपेक्षित और कठिन जीवन जी रहा यह वर्ग आज भी [illegible] मुख्यधारा से अलग कठिन परिस्थितियों में जी रहा है। इनके [illegible] अपने मंगल की कामना करने वाला मुख्यधारा का समाज